विष्वास का अर्थ है कि मनुष्य परमेष्वर में प्रतीति करता है। अनुग्रह का अर्थ है कि परमेष्वर मनुष्य में प्रतीति करता है।

ज़िंदगी एक भागीदारी है, दोतरफा रास्ता, देने और लेने की श्रंखला जो स्वस्थ और उत्पादक संबंध बनाती है। इस भागीदारी के बिना यह ज़िंदगी आगे नहीं बढ़ सकती। यहां तक कि परमेष्वर ने भी, चाहे वह अधिपति है और किसी के प्रति भी उत्तरदायी नहीं है, अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए मनुष्य के साथ भागीदारी करने का चयन किया। किसी भी संबंध का बल और स्वास्थय इस पर निर्भर है कि प्रत्येक जन अपनी भूमिका निःस्वार्थ भाव से निभाए।

परमेष्वर के साथ आपका संबंध, कुछ लोगों की प्रतीति के विपरित, केवल आपके बारे में ही नहीं है। विष्वास से तात्पर्य यह है कि आप परमेष्वर को कुछ अर्पित करते हैं, इस आषा से कि इससे आपकी दुनिया बदल जाएगी। परमेष्वर आपकी आषा है.....और आप उसकी। अतः अपना विष्वास और भरोसा परमेष्वर में डालें जबकि वह, बदले में, अपना भरोसा आपमें डालता है। अपनी ज़िंदगी में परमेष्वर के सारे अनुग्रह केवल अपने लाभ के लिए नहीं बल्कि परमेष्वर के राज्य के लाभ के लिए उपयोग करें।

आज के लिए प्रार्थना

हे परमेष्वर, यह जानने में मेरी सहायता करें कि हमारा संबंध दोतरफा रास्ता है और हम अपनी आवष्यक सहायता के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। मैं जानता हूँ कि मैं अपने भविष्य के लिए आप पर भरोसा रख सकता हूँ और मांगता हूँ कि आप अपनी योजनाओं के लिए मुझ पर भरोसा रखें। आपके अनुग्रह से, मैं असफल नहीं होऊँगा।

आज के लिए वचन

कुलुस्सियों 1:27 जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है? और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।

इफिसियों 2:8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है।

रोमियों 5:2 जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमंड करें।

हो सकता है कि ज़िंदगी के एक मौसम से दूसरे मौसम में प्रष्न बदलते जाएं; तथापि जवाब हमेषा एक से रहते हैं।

ज़िंदगी के सफ़र में हम एक मौसम से दूसरे मौसम में प्रवेष करते जाते हैं। प्रीस्कूल से प्राथमिक स्कूल, हाई स्कूल से कॉलेज या नौकरी, बच्चों के पालन–पोषण से रिटायरमेंट, ज़िंदगी के मौसम आते और चले जाते हैं। ज़िंदगी के प्रत्येक मौसम में हम बहुत सारे नए प्रष्नों और ऐसी बातों का सामना करेंगे जो हमने पहले कभी नहीं देखी हैं।

चाहे ज़िंदगी के एक मौसम से दूसरे मौसम में प्रष्न बदलते जाएं, जवाब हमेषा एक से रहते हैं। परमेष्वर का वही वचन, परमेष्वर की इच्छा, और परमेष्वर के मार्ग आपके जीवनभर आपके मार्गदर्षक बने रहेंगे। खराई, चरित्र, दीनता, धीरज, प्रेम, क्षमा, संयंम और विष्वास आपकी स्थिरता बने रहेंगे और जीवनभर आपके साथ दृढ़ता से खड़े रहेंगे। परमेष्वर के वचन में से साधारण जवाबों को थामें रहें।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रभु, मैं वादा करता हूँ कि मैं आपके वचन को अपने समीप रखूंगा और इसे अपने हृदय में छिपा कर रखूंगा ताकि मैं आपकी इच्छा से भटक न जाऊँ। मैं निरंतर इसे अपना चिंतन और अपना आनन्द बनाता

रहूंगा। ज़िंदगी के विभिन्न मौसमों में मेरी अगुवाई करें और प्रत्येक नए दिन में मुझे अपनी शांति दें।

आज के लिए वचन
इब्रानियों 13:8 यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है।

गलातियों 5:22–23 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वासयोग्यता.....

खाली बर्तन में बहुत सामर्थ्य होती है

2 राजा 4 ऐसी स्त्री के बारे में बताता है जिसकी आवष्यकता बहुत बड़ी थी। वह एलीषा नबी के पास आई और उसे कहा गया कि वह अपने पड़ोसियों से खाली बर्तन मांग लाए। एलीषा ने उससे कहा कि परमेष्वर उसके थोड़े से तेल पर अभिषेक करेगा और उसे बहुगुणित करेगा कि उससे सारे खाली बर्तन भर जाएं। खाली बर्तन क्यों? भरे हुए बर्तन शायद अपने सर्वोत्तम दिन तक पहुंच चुके हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि उनमें क्या भरा है। आधे भरे बर्तन, यदि अपना सर्वोत्तम भी करें तो, परमेष्वर और मनुष्य का मिश्रण उत्पन्न करते हैं, और परिणामस्वरूप अभिषेक प्रभावहीन हो जाता है। तथापि, खाली बर्तन सबसे बड़ा अवसर प्रदान करते हैं कि वे परमेष्वर के चमत्कारी अभिषेक से पूरी तरह और ऊपर तक भर जाएं। हमारा जीवन वह बर्तन है जिसे हम परमेष्वर के सामने लाते हैं। बहुत बार हम ऐसी बातों से आधे या पूरे भरे रहते हैं जिन्हें परमेष्वर पसंद नहीं करता, और जो उस अभिषेक का विरोध या सामना करती हैं जिसे परमेष्वर हममें उण्डेलना चाहता है। क्या आप सांसारिक बातों को अपने में से निकालकर खाली होना चाहते हैं ताकि परमेष्वर द्वारा भरे जा सकें? प्रार्थना में अपने आप को खाली कर दें और अपने जीवन में पवित्र आत्मा के ताज़ा अभिषेक को भरने दें।

आज के लिए प्रार्थना
हे पिता, मैं अपने में से सारी सांसारिक बातें निकालकर अपने आपको खाली करता हूँ और आपसे मांगता हूँ कि आप मेरा जीवन भर दें। जब मैं अपने आपको खाली और आपके अभिषेक की आवष्यकता में देखता हूँ तो मैं निराष नहीं होऊँगा।

आज के लिए वचन
2 राजा 4:1–7 भविष्यद्वक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा, तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए। एलीशा ने उस से पूछा, मैं तेरे लिये क्या करूं? मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है? उस ने कहा, तेरी दासी के घर में एक हांड़ी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है। उस ने कहा, तू बाहर जाकर अपनी सब पड़ोसिनों से खाली बरतन मांग ले आ, और थोड़े बरतन न लाना। फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बन्द करके उन सब बरतनों में तेल उंडेल देना, और जो भर जाए उन्हें अलग रखना। तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जाकर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बरतन लाते गए और वह उंडेलती गई। जब बरतन भर गए, तब उस ने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक और भी ले आ, उस ने उस से कहा, और बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया। तब उस ने जाकर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। और उस ने कहा, जा तेल बेचकर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उस से तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना।

जीवन एक अवसर है

कल्पना करें कि आप एक सुबह उठे और आपको पता चला कि आपके पास न तो नौकरी रही, न कार और शायद न ही घर। इसे आपके जीवन का सबसे दुखदायी दिन कहा जा सकता है या इसे जीवन के सबसे बड़े अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। इसके बारे में सोचें.....चाहे अपना सबकुछ खो दिया और शायद आप उसे खोना नहीं चाहते थे, फिर भी, अब आपके पास अवसर है कि उन वस्तुओं के स्थान

पर आप वे वस्तुएं ले आएं जिन्हें आप अब चाहते हैं। शायद इस बार आप इन्हें ज्यादा बेहतर बना सकते हैं, अलग ढंग से कर सकते हैं, परिणामस्वरूप आपको आपकी वर्तमान और भावी आवष्यकताओं के अनुसार ज्यादा उचित वस्तुएं मिल जाएं। आप हमेषा यह चयन नहीं कर सकते कि आप क्या खोएंगे परन्तु यह चयन आप हमेषा कर सकते हैं कि आप परिश्रम करेंगे और नुकसान की भरपाई बेहतर वस्तु से करेंगे।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रिय प्रभु, मुझे अनुग्रह दें कि मैं अपने नुकसानों से आगे बढ़ूँ, अपने पछतावे आपके हाथ में सौंप दूँ और अपना भरोसा आपमें रखूं। मुझे बुद्धि दें कि मैं प्रत्येक दिन को आपके लिए सर्वोत्तम प्राप्त करने के अवसर के रूप में देखूं।

आज के लिए वचन

फिलिप्पियों 3:13–14 हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

यषायाह 43:18–19 अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो, न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ। देखो, मैं एक नई बात करता हूं; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उस से अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा।

अपनी अंतिम साँस लेते समय भी आप आत्मविष्वास के साथ कह सकते हैं कि आपका सर्वोत्तम दिन अभी आने पर है

सारी मनुष्यजाति की भिन्नताओंः संस्कृति, राष्ट्रीयता, जीवन में पदवी, अमीरी या गरीबी, साक्षरता या अनपढ़ता, जन्म की परिस्थितियों की परवाह किए बिना हम सभी की एक सर्वसामान्य नियुक्ति निर्धारित है जो हम सभी को मिलेगीः वह है मृत्यु की नियुक्ति।

मृत्यु की इस नियुक्ति के कारण ही हमें संसार में सुसमाचाार प्रचार करना है, मसीह का प्रेम बांटना है और परमेष्वर का प्रेम स्वीकार करने या ठुकराने का अवसर देना है। जो लोग मसीह को ठुकरा देते हैं, मृत्यु उनके लिए अनन्त दण्ड लाती है परन्तु मसीहियों के लिए मृत्यु अनन्त शांति, आनन्द, आषा और चिरस्थाई प्रेम में प्रवेष करने का द्वार है। मसीहियों के लिए स्वर्ग के इस ओर सबसे अद्‌भुत आषा यह आष्वासन है कि इस जीवन में चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए, सर्वोत्तम अभी आने पर है। जबकि अब हम यह जान गए हैं इसलिए यह अत्यावष्यक है कि हम अपने जीवन का सामना अनन्त दृष्टिकोण से करें क्योंकि सचमुच हमारा सर्वोत्तम दिन अभी आने पर है!

आज के लिए प्रार्थना

हे पिता, यह जानकर मैं आपका बहुत धन्यवाद करता हूँ कि आप मेरे लिए स्थान तैयार कर रहे हैं। एक अद्‌भुत दिन मैं आपको आमने सामने देखूंगा और आपके प्रेम की श्रद्धामय समझ और आपकी उपस्थिति के प्रताप से भर जाऊँगा। जीवन का सामना करते हुए, अनन्त दृष्टिकोण बनाए रखने में मेरी सहायता करें – क्योंकि सबकुछ कहने और सब काम समाप्त कर देने के बाद, मेरा सर्वोत्तम दिन आ जाएगा।

आज के लिए वचन

1 थिस्सलुनीकियों 4:13–14 हे भाइयों, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो; ऐसा न हो, कि तुम औरों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा।

यूहन्ना 14:1–3 तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

लूका 21:28 जब ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।

दोबारा प्रयास करने के लिए ज्यादा धीरज विकसित करें

शायद आपने पहले से सुना हो कि सफलता केवल एक कदम की प्रक्रिया ही नहीं है और सफलता अक्सर उन्हें मिलती है जो इस प्रक्रिया में दृढ़ बने रहते हैं। हमारा जीवन मुसीबतों और गल्तियों से भरा हुआ है, जो मांग करती हैं कि हम निरंतर एक सूची बनाते रहें, और उन घटकों को निकालते रहें जो हमें असफल कर सकते हैं और दोबारा प्रयास करें।

हमारा मसीही जीवन भी ऐसा ही है। विष्वासी का जीवन मांग करता है कि जब हम गिरें, तो दोबारा खड़े हों, अपने आप को झाड़ें और फिर से आगे बढ़ें। केवल इसलिए कि कोई काम एक बार में नहीं हुआ, इसका अर्थ यह नहीं है कि यह कभी नहीं होगा। इसका केवल यह अर्थ है कि आपको दोबारा प्रयास करना पड़ेगा। आपने अतीत में कौन से विचार या प्रयास केवल इसलिए छोड़ दिए हैं क्योंकि वे पहली बार में सफल नहीं हुए........शायद आपको दोबारा प्रयास करने की आवष्यकता है।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रिय स्वर्गिक पिता, मुझे अपने जीवन में आत्मा के फलों को बढ़ाने में सहायता करें, विषेषकर धीरज और और संयम का फल। मुझे सिखाएं कि मैं अपने डरों को नियंत्रित करूँ और उन कामों का प्रयास करना न छोड़ूँ जो आपने मुझे दिए हैं।

आज के लिए वचन

फिलिप्पियों 3:14 निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

नीतिवचन 24:16 क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे तौभी उठ खड़ा होता है; परन्तु दुष्ट लोग विपत्ति में गिरकर पड़े ही रहते हैं।

हबक्कूक 2:3 क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेवाली है, वरन इसके पूरे होने का समय वेग से आता है; इस में धोखा न होगा। चाहे इस में विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उस में देर न होगी।

आप जिन्हें अपने समीप आने देते हैं, वे आपको सीमित कर सकते हैं

हम में से वे अधिकतर लोग, जिनका पालन–पोषण विवेकषील माता–पिता के द्वारा हुआ है, इस बात को बहुत जल्दी सीख गए थे कि किन लोगों को घर पर मम्मी से मिलने के लिए लाना है और किन्हें नहीं। ऐसा लगता है कि माताओं में एक ऐसा भीतरी राडार सिस्टम होता है जो उन्हें सचेत कर देता है कि बचपन में जिन बच्चों के साथ हमारी दोस्ती थी वे हमारे लिए अच्छे थे या नहीं। वे जानते थे कि बचपन में ही हमारे बुरे मित्रों की संगति से हमारे भविष्य पर बुरा असर पड़ सकता था और जब हम बड़े हो गए तब भी यह सत्य बरकरार रहा।

हमारे समीपी मित्र अक्सर वे होते हैं जो हमारे जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव डालते हैं। हम उन लोगों पर भरोसा रखते हैं और अपने निजी भेद और सपने उनके साथ बांटते हैं। हम उन्हें अपने जीवन में बोलने की अनुमति भी देते हैं। हम उनके विचारों को मूल्यवान मानते हैं। इसी कारण यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हम प्रभु की आवाज़ सुनें और उसके परामर्ष के अनुसार ही अपने समीपी संबंधों के लिए लोगों को चुनें। क्या आपके समीपी लोग आपमें प्रतीति करते हैं? क्या वे पानी पर चलने के लिए आपको प्रोत्साहित करते हैं या वे आपको आपके चारों ओर के तूफान को देखने के लिए मजबूर करते हैं? शायद आपको अपनी कष्ती में सवार लोगों का दोबारा मूल्यांकन करना चाहिए कि वे आप पर कैसा प्रभाव डालते हैं और आवष्यकतानुसार अपने संबंधों में सुधार लाएं।

आज के लिए प्रार्थना
हे परमेष्वर, आज मैं अपने मित्रों के बारे में आपके विचार जानना चाहता हूँ। मैं आपसे मांगता हूँ कि मेरे पास दर्षन और उद्देष्य वाले विष्वास से भरपूर लोग लाएं। मैं यह भी जानता हूँ कि मैं भी किसी का समीपी मित्र हूँ, अतः मुझे उन पर अच्छे प्रभाव डालने और उन्हें आपके समीप लाने के लिए उपयोग करें।

आज के लिए वचन
1 कुरिन्थियों 15:33 धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।

प्रेरितों 4:23 वे छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ महायाजकों और पुरनियों ने उन से कहा था, उनको सुना दिया।

सेवक होने की सबसे बड़ी परख तब होती है जब आपके साथ सेवक जैसा बर्ताव किया जाता है

बहुत लोग परमेष्वर द्वारा इस्तेमाल होना चाहते हैं परन्तु सभी लोग इस्तेमाल होने के लिए तैयार नहीं होना चाहते। साथ ही, परमेष्वर की ओर से सेवकाई के लिए आने वाले अवसर मांग करते हैं कि हम अपने आप को दीन करें और दूसरों के सेवक बनें। यीषु ने हमें सेवक होने का उदाहरण दिया जब उसने अपने षिष्यों के पांव धोए। यह हमें दर्षाता है कि कोई भी व्यक्ति इतना महान नहीं है कि वह सेवक न बन सके और न ही कोई पदवी इतनी ऊँची है कि उसे पाने वाला दूसरों की सेवा करने से बच सकता है। वास्तव में, यदि आप परमेष्वर के राज्य में महान होना चाहते हैं, तो आपको सभी का सेवक बनना ही होगा। अतः हमें कैसे पता चलेगा कि हममें दीनता का स्वभाव है और हम स्वै–महत्त्व जैसे मुद्दों के कारण घमण्ड के बोझ से दबे हुए नहीं हैं? सेवक होने की सबसे बड़ी परख तब होती है जब आपके साथ सेवक जैसा बर्ताव किया जाता है। जब आपसे दूसरों की सेवा करवाई जाती है तो आपको कैसा महसूस होता है? इसे सुधारें।

आज के लिए प्रार्थना
हे पिता, मैं सेवक का ह्रदय पाना चाहता हूँ। जब आप मुझे इस्तेमाल करने के लिए चुनेंगे, तो मैं इच्छुक और षिकायत न करने वाला सेवक बनूंगा, यह जानते हुए कि मैं जो कुछ भी करता हूँ आपके लिए करता हूँ।

आज के लिए वचन
मत्ती 23:11–12 जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगाः और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।

मरकुस 10:43–45 पर तुम में ऐसा नहीं है, बरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे।

प्रतिउत्तर देने में सक्षम

शायद हमारी सबसे बड़ी क्षमता हमारी उपलब्धता है, जिसके बिना हमारी सभी क्षमताएं उपयोग नहीं हो पाती। परमेष्वर का वचन कहता है कि यदि हम अपने भाई को आवष्यकता में देखें और हमारे पास वह वस्तु है जिससे उसकी आवष्यकता की पूर्ति हो जाएगी, परन्तु उसकी सहायता करने का तरस हममें नहीं आता, तो हममें परमेष्वर का प्रेम कैसे हो सकता है? साधारण शब्दों में, यह आयत कहती है कि यदि किसी की आवष्यकता का प्रतिउत्तर देने का अवसर और क्षमता हमारे पास है और फिर भी हम प्रतिउत्तर नहीं देते, तो प्रतिउत्तर न देने के कारण हमारी वह क्षमता व्यर्थ हो जाती है।

जबकि बहुत लोग अधिकार की तलाष में रहते हैं, परमेष्वर ऐसे लोगों की तलाष में है जो जिम्मेदार हैं। जब परमेष्वर को जिम्मेदार व्यक्ति मिल जाता है, ऐसा व्यक्ति जो आवष्यकता की पूर्ति के लिए अपनी क्षमतानुसार प्रतिउत्तर देता है, तो परमेष्वर उस व्यक्ति को उसका मिषन पूरा करने के लिए सारा आवष्यक अधिकार दे देता है। द्वारों को खोलना परमेष्वर की जिम्मेदारी है और उन द्वारों में प्रवेष करना मनुष्य की जिम्मेदारी है। जब आप सक्षम हैं तो प्रतिउत्तर दें।

आज के लिए प्रार्थना

हे पिता, मुझे जीवन की प्रत्येक चुनौती का सामना करने के लिए सक्षम बनाने और साथ ही दूसरों की आवष्यकता में उनकी सहायता करने के लिए उनके साथ खड़े होने में सक्षम बनाने के लिए आपका धन्यवाद। मैं अपने भीतर रहने वाली सबसे महान शक्ति पर आश्रित होना और जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में प्रतिउत्तर देने की सक्षमता विकसित करना सीखूंगा।

आज के लिए वचन

फिलिप्पियों 4:13 जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।

1 कुरिन्थियों 10:13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर हैः और परमेश्वर सच्चा हैः वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, बरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको।

प्रकाषितवाक्य 3:7 और फिलेदिलफिया की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जो पवित्र और सत्य है, और जो दाऊद की कुंजी रखता है, जिस के खोले हुए को कोई बन्द नहीं कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता।

सफलता का आँकलन प्रतिदिन के आधार पर कभी न करें

हमारा जीवन प्रतिदिन हम पर बहुत अच्छा प्रभाव डालने वाले अवसरों और बहुत बुरा दबाव डालने वाले अवसरों से भरा पड़ा है। बहुत बार हम पर तात्कालिक भावनाओं के आधार पर निर्णय लेने का दबाव भी आता है। मेरा यकीन मानें, यह चाहे कितना ही अच्छा हो या कितना ही बुरा, यदि आप उसी समय प्रतिक्रिया करते हैं तो आप उसे ज्यादा बिगाड़ सकते हैं या बद्तर बना सकते हैं।

अस्थाई परिस्थिति को लेकर उसमें से चिरस्थाई समस्या पैदा करने से बचने के लिए हमें प्रतिक्रियावादी व्यवहार छोड़ना होगा। इसके लिए आवष्यक है कि हम अपना प्रतिउत्तर परमेष्वर के वचन के अनुसार ढाल लें और जीवन को सुधारने में सहायता करने के लिए परमेष्वर को समय दें। सफलता का आँकलन प्रतिदिन के आधार पर कभी न करें।

आज के लिए प्रार्थना

हे पिता, जीवन को अपनी नहीं बल्कि आपकी आँखों से, आपके दृष्टिकोण से देखने में मेरी सहायता करें। जब मैं हैरान होता हूँ कि मेरा दिन मेरे सामने क्या लाएगा, तब मैं उस हैरानी को प्रार्थना में आपके चरणों में रख देता हूँ। मुझे दर्षाएं कि मैं कैसे प्रतिउत्तर दूँ और मुझे सुरक्षित रखें।

आज के लिए वचन
याकूब 1:19 हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते होः इसलिये हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो।

सभोपदेषक 5:2 बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के साम्हने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में हैं और तू पृथ्वी पर है; इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हों।

सभोपदेषक 7:9 अपने मन में उतावली से क्रोधित न हो, क्योंकि क्रोध मूर्खों ही के हृदय में रहता है।

नीतिवचन 19:11 जो मनुष्य बुद्धि से चलता है वह विलम्ब से क्रोध करता है, और अपराध को भुलाना उसको सोहता है।

कुलुस्सियों 3:15 और मसीह की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो।

परमेष्वर आपको वहां नहीं भेजेगा जहां वह सबकुछ प्रावधान नहीं करवाएगा

पुराने नियम में परमेष्वर का एक नाम यहोवा यिरे है। साधाारणतः परमेष्वर के इस नाम का उपयोग यह दर्षाने के लिए किया जाता है कि वह सबकुछ प्रावधान करने वाला है। तथापि, इसका शाब्दिक अर्थ है, "यहोवा के पर्वत पर यह दिखाई देगा"। हमारे विष्वास के पिता ने, सबसे पहले परमेष्वर को इस रूप में प्रस्तुत किया कि वह अपने चुनिंदा स्थान पर सबकुछ उपलब्ध करवाता है। अब्राहाम के संदर्भ में, परमेष्वर ने उसे एक पर्वत पर जाने के लिए कहा जहां उसका प्रावधान उसके आने की प्रतीक्षा कर रहा था। ये बातें बाइबल में केवल इसलिए नहीं लिखी गईं थी कि हमें अब्राहाम की यात्रा की जानकारी मिले, बल्कि इसलिए कि हमें अपनी यात्रा के लिए भी प्रोत्साहन मिले। अब्राहाम के समान, आपको भी आपके प्रावधान उपलब्ध मिलेंगे और प्रत्येक नाजुक मोड़ पर और परमेष्वर के साथ आपकी यात्रा में आपकी प्रतीक्षा करेंगे। परमेष्वर आपको वहां नहीं भेजेगा जहां वह सबकुछ प्रावधान नहीं करवाएगा। प्रभु पर भरोसा रखें क्योंकि वह यहोवा यिरे है।

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रभु मुझे अपना मार्ग दिखाएं और मुझे उस मार्ग के बारे में समझ दें जिस पर आप मुझे ले जाना चाहते हैं। मुझे मेरे नियुक्त मार्ग पर ले चलें, और मेरे लिए यात्रा के सारे प्रावधान करें। मैं अपने स्त्रोत के रूप में आप पर भरोसा रखता हूँ।

आज के लिए वचन
उत्पत्ति 22:14 और इब्राहीम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रखाः इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है, कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।

रोमियों 4:1 सो हम क्या कहें, कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को क्या प्राप्त हुआ?

रोमियों 4:20–24 और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी है। इस कारण, यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया। और यह वचन, कि विश्वास उसके

लिये धार्मिकता गिया गया, न केवल उसी के लिये लिखा गया। बरन हमारे लिये भी जिन के लिये विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा, अर्थात् हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते हैं, जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।

परमेष्वर ने कभी नहीं चाहा कि मनुष्य के साथ उसका संबंध मनुष्यजाति के साथ मनुष्य के संबंध का स्थान ले ले

उत्पत्ति की पुस्तक में परमेष्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया और उसे अदन की वाटिका में रखा। बाद में परमेष्वर अपनी बनाई हुई सम्पूर्ण सृष्टि को देखा और देखा कि केवल एक ही बात अच्छी नहीं थी। उसने कहा, "मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं।" अतः परमेष्वर ने स्त्री बनाई।

हालाँकि परमेष्वर के साथ आपके संबंध का स्थान कोई नहीं ले सकता, फिर भी परमेष्वर ने यह भी कभी नहीं चाहा कि उसके साथ आपका संबंध आपके किसी अन्य व्यक्ति के साथ संबंध का स्थान ले ले। वह जानता है कि लोगों को लोगों की आवष्यकता है। हमें एक दूसरे की आवष्यकता है। परमेष्वर के साथ और अपने प्रियजनों के साथ अपने महत्त्वपूर्ण संबंधों पर समय बिताएं।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रभु, मैं आपके साथ अपने संबंध को गहन करना चाहता हूँ। आप ही मेरे जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। साथ ही, हे प्रभु, मैं उन संबंधों को दृढ़ करना और उनका आनन्द उठाना चाहता हूँ जो आपने मुझे अन्य लोगों के साथ दिए हैं। अपने संबंधों में आपकी प्राथमिकताओं को जानने और उनका पालन करने में मेरी सहायता करें। आपका धन्यवाद।

आज के लिए वचन

उत्पत्ति 2:18 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मै उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए।

इफिसियों 5:31 इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।

नीतिवचन 18:24 मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।

बदलाव आ रहा है – आप इसे पसंद करें या न करें, बदलाव आ रहा है

अवस्थांतर के क्षण हमारे जीवन के सबसे ज्यादा अस्थिर और परेषान करने वाले क्षण हो सकते हैं। एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना, एक नौकरी को छोड़कर दूसरी नौकरी करना, या जीवन के एक मौसम को छोड़कर दूसरे में प्रवेष करना जीवन की निष्चितताएं हैं। सभी बदलाव बुरे नहीं होते और बहुत बार बदलाव आवष्यक और अपरिहार्य होते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि परमेष्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि वह हमें वैसे नहीं छोड़ता जैसे हम हैं। एक बात पक्की है, बदलाव आ रहा है, आप इसे पसंद करें या न करें, बदलाव आपके पास आ रहा है। जब आपके जीवन में अवस्थांतर का समय आता है, तब लचीला बनें, परमेष्वर पर भरोसा रखें और अपने महानतम दिन का दर्षन प्राप्त करें।

आज के लिए प्रार्थना

हे परमेष्वर, मुझे अपने जीवन में अवस्थांतर के उन क्षणों को स्वीकारना सिखाएं जो आवष्यक और अपरिहार्य हैं। अनिष्चितता और असुरक्षा के मध्य में मेरी अगुवाई करें और मुझे बदलाव के दूसरी ओर के बेहतर दिन का अपना दर्षन दें।

आज के लिए वचन
फिलिप्पियों 3:13–14 हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

यषायाह 43:19 देखो, मैं एक नई बात करता हूं; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उस से अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा।

परमेष्वर आपके लिए एक भविष्य बना रहा है और उस भविष्य के लिए वह "आप" को बना रहा है

पवित्रषास्त्र दर्षाता है कि जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी के साथ काम करता है, उसी प्रकार परमेष्वर भी हमारे साथ निरंतर काम करने के लिए प्रतिबद्ध है। जीवन के प्रत्येक दिन के लक्ष्य और प्रत्येक परिस्थिति में वह प्रयास कर रहा है कि वह हमें अपने एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता, यीषु मसीह के स्वरूप में ढाले।

परमेष्वर आपके लिए एक भविष्य बना रहा है, जबकि साथ साथ, उस भविष्य को गले लगाने के लिए वह आपमें ज्यादा क्षमता उत्पन्न कर रहा है। इसी कारण परमेष्वर ने आदेष दिया है कि सब बातें मिलकर हमारे लिए भलाई ही को उत्पन्न करें और उसने जीवन के दबावों को इस प्रकार तैयार किया है कि वे हमें कटु नहीं बल्कि बेहतर बनाएं। अपनी बेहतर छवि को स्वीकार करें और स्वयं को वैसे देखना आरम्भ करें जैसे परमेष्वर आपको देखता है। अपने जीवन के लिए उसके सपने देखें और उसे एक नया "आप" बनाने दें।

आज के लिए प्रार्थना
हे परमेष्वर, मेरे पिता, मुझे तैयार करें और मुझे एक मीरास दें......मुझे उस भविष्य में ले चलें जिसका सपना आपने मेरी सृष्टि के समय देखा था। मुझे आपके हाथों में लचीला और ढालने लायक बनने में सहायता करें। प्रधान कुम्हार बनें और मैं मिट्टी बनकर संतुष्ट रहूँगा। मुझे आपकी दृष्टि में ग्रहणयोग्य बनाएं।

आज के लिए वचन
फिलिप्पियों 1:6 और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।

भजन 138:8 यहोवा मेरे लिये सब कुछ पूरा करेगा; हे यहोवा, तेरी करूणा सदा की है। तू अपने हाथों के कार्यों को त्याग न दे।

1 तीमुथियुस 4:8 क्योंकि देह ही साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है।

यषायाह 64:8 तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता है; देख, हम तो मिट्टी है, और तू हमारा कुम्हार है; हम सब के सब तेरे हाथों के काम हैं।

संघर्षों से हमेषा बचने की बजाय उन्हें संभालना सीखें

संघर्ष अक्सर एकता की ओर बढ़ने के लिए एक आवष्यक कदम होता है। अक्सर संघर्ष के दौरान ही हम सर्वोत्तम फैसले लेते हैं और उस समय की सर्वोत्तम सहमति पर पहुंचते हैं। अपने जीवन में आगे बढ़ते हुए मुकाबले से इतना न डरें कि आप संघर्ष के मूल्य और लाभों को पहचानने में असफल हो जाएं। हमें न केवल अपने शत्रुओं से संघर्ष करना है बल्कि हमें अपने मित्रों को मजबूत बनाना है, अपने संबंधों को बेहतर बनाना है और जीवन की चुनौतियों के अज्ञात जवाबों को ढूँढना है। यदि हम जन्म समय की पीड़ा, दबावों और कठिनाइयों करे पूरी तरह भूला देते तो आज हम कहां होते? याद रखें जब हम संघर्षों के बावजूद सत्य की खोज करते हैं तब हमें सर्वोत्तम मिलता है। संघर्षों से हमेषा बचने की बजाय उन्हें संभालना सीखें।

आज के लिए प्रार्थना
हे पिता, मुझे इस जीवन के संघर्षों से निडर होकर मजबूती के साथ खड़ा होना सिखाएं। मुझे अनुग्रह दें कि जब मुझे आपके लिए अपना सर्वोत्तम प्राप्त करने के लिए आवष्यक संघर्ष करना पड़े तो मैं उन क्षणों को संभाल सकूँ। संघर्षों के कारण विभाजन न आने दें बल्कि मुझे तैयार करें कि मैं यीषु के नाम में बलवंत हो सकूँ।

आज के लिए वचन
नीतिवचन 27:17 जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

1 पतरस 4:12 हे प्रियों, जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इस से यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है।

2 कुरिन्थियों 4:18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

हो सकता है कि हमारे जीवन की सबसे बड़ी आषीषें हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं कि हम दूसरों के लिए आषीष बनें

अय्यूब की कथा, साथ ही साथ यूसुफ की कथा, जीवन के इस ईष्वरीय सिद्धांत के प्रतिबिम्ब हैं। यूसुफ को शायद बंदीगृह से कभी आजादी न मिली होती यदि उसने फिरौन के प्रधान रसोइए के प्रति कृपालु और उसके लिए आषीष बनने में समय न दिया होता। उसी प्रकार, अय्यूब के जीवन में ऐसा समय आया जब वह अपना सबकुछ खो चुका था। अय्यूब की पुस्तक के अंतिम अध्याय में हम पढ़ते हैं कि परमेष्वर ने अय्यूब का दुःख तभी दूर किया जब उसने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की।

यहां तक कि परमेष्वर ने स्वयं को भी इस सिद्धांत की सीमा से बाहर नहीं रखा। देखिए, परमेष्वर अपनी सृष्टि से अलग हो गया, और मनुष्यजाति की मंज़िल अब नरक था, तब अपनी सबसे बड़ी चाहत को प्राप्त करने के लिए परमेष्वर के पास एक ही रास्ता था। ऐसा क्या था जो परमेष्वर के लिए सबसे बड़ी आषीष होता? यह मनुष्य के साथ उसके संबंध की पुनःस्थापना था। तथापि, पुनःस्थापना के लिए एक बलिदान की आवष्यकता थी। परमेष्वर को आषीष पाने के लिए, उसे पहले दूसरों को आषीष देनी पड़ी। अतः परमेष्वर ने अपना एकलौता पुत्र भेजा और मनुष्यजाति को आषीष के रूप में पापों की क्षमा दी, और बदले में, परमेष्वर को आषीष के रूप में बहुत सारी संतानें मिली। हो सकता है कि हमारे जीवन की सबसे बड़ी आषीषें हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं कि हम दूसरों के लिए आषीष बनें।

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रिय स्वर्गिक पिता, मैं आपसे मांगता हूँ कि जब जब मुझे कोई आवष्यकता हो तब तब आपका पवित्र आत्मा मुझे याद दिलाए कि अन्य लोग भी आवष्यकता में हैं। अपने जीवन को दोबारा केन्द्रित करने में मेरी

सहायता करें ताकि अपने जीवन और काम पर आपकी आषीष की प्रतीक्षा करते हुए मैं दूसरों के लिए आषीष बनूँ।

आज के लिए वचन
इफिसियों 6:8 क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतंत्र; प्रभु से वैसा ही पाएगा।

उत्पत्ति 12:2 और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा।

गलातियों 6:7 धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।

जो लोग छोड़ते नहीं, वे पकड़ भी नहीं सकते

जीवन अवस्थांतरों से भरा पड़ा है......जो कुछ आरम्भ होता है, उसका अंत भी होता है। अक्सर हमें एक मंज़िल पर पहुंच कर पता चलता है कि यह तो केवल अगले महान अभियान के लिए प्रस्थान बिन्दू है। कभी कभी परमेष्वर हमें एक राह पर ले जाता है ताकि हम उस राह के अंत तक पहुंचें जबकि कभी कभी वह हमें एक राह पर ले जाता है ताकि हम उस राह पर आने पर वाले दोराहे पर पहुचें। दोनों ही मामलों में, अवस्थांतर के लिए साहसी निर्णयों और ताज़ा प्रतिबद्धताओं की आवष्यकता पड़ती है।

कभी कभी जीवन हमसे मांग करता है कि हम किसी नई वस्तु को पकड़ने से पहले पुरानी को पूरी तरह छोड़ दें। अतीत को छोड़ने का अर्थ हमेषा यह नहीं होता कि हम अतीत के लोगों को भी छोड़ दें। बहुत बार, इसके लिए केवल नुकसान, निराषाओं और असफलताओं को भूला देने की आवष्यकता होती है। तथापि, कभी कभी हो सकता है कि हमें परमेष्वर के दिए हुए नए दिन को पूरी तरह से स्वीकार करने से पहले अपने आप को किसी व्यक्ति या समूह से पूरी तरह अलग करना पड़े। छोड़ना आसान नहीं होता परन्तु पकड़ने से पहले अक्सर आवष्यक जरूर होता है।

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रभु, मैं समझ गया हूँ कि किसी नई वस्तु को पकड़ने से पहले मुझे पुरानी को छोड़ना होगा। मुझे दिखाएं कि यह कैसे होगा। मैं किसी और से बढ़कर आपको प्रसन्न करना चाहता हूँ। मुझे यह पहचानने की बुद्धि दें कि मेरी सोच और मेरे जीवन में किन बदलावों की आवष्यकता है। मैं आपकी बुद्धि का अनुसरण करूँगा।

आज के लिए वचन
इफिसियों 4:22—24 कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है।।

उत्पत्ति 2:24 इस कारण पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बनें रहेंगे।

मत्ती 19:5 कि इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे।

कभी कभी हमारे जीवन के मौसम मांग करते हैं कि हम दूसरों में परमेष्वर पर भरोसा रखें

उत्पत्ति 22 में अब्राहाम से कहा गया कि वह अपने पुत्र इसहाक को उस स्थान पर लेकर जाए जो परमेष्वर उसे दिखाएगा और वहां पर उसे परमेष्वर के लिए होमबलि करके चढ़ा दे। उस समय इसहाक 30 से 35 वर्ष की आयु का होगा। अब्राहाम ने इसहाक को अपने साथ लिया और तीन दिन की पैदल यात्रा करके बेर्षेबा के उत्तर की ओर गया जिसे आज पुराने यरूषलेम के नाम से जाना जाता है। अब्राहाम ने होमबलि की लकड़ी इसहाक के कंधों पर डाल दी और वे उस पहाड़ पर चढ़ने लगे जो परमेष्वर ने उन्हें दर्षाया था। यह घटना आगे बढ़ती है और अब्राहाम इसहाक को रस्सी से बांधता है, नई बनाई हुई वेदी पर लकड़ियां सजाता है और इसहाक को लकड़ियों के ऊपर बलिदान के लिए लेटा देता है। इब्रानी 11 बताता है कि अब्राहाम ने परमेष्वर पर भरोसा रखा.....परन्तु इसहाक किस पर भरोसा रख रहा था?

इसहाक ने अपने पिता से प्रष्न पूछा और अपने पिता का जवाब सुनकर अपने पिता को अनुमति दी कि वह उस बांधे और होमबलि के लिए तैयार करे। इस पूरी घटना में, हालाँकि इसहाक ने स्वयं परमेष्वर को नहीं सुना था, फिर भी उसने अब्राहाम में परमेष्वर पर भरोसा रखा। कभी कभी हमारे जीवन के मौसम मांग करते हैं कि हम दूसरों में परमेष्वर पर भरोसा रखें।

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रिय स्वर्गिक पिता, मेरे जीवन के वे मौसम और समय पहचानने में सहायता करें जो यह मांग करते हैं कि मैं दूसरों में और दूसरों के द्वारा आप पर भरोसा रखूं। मुझे अनुग्रह दें कि मैं आपके भेजे हुए अगुवों को स्वीकार करूँ और आपकी इच्छानुसार उनके द्वारा आपकी अगुवाई में चलूं।

आज के लिए वचन
उत्पत्ति 22:7–9 इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा, हे मेरे पिता; उस ने कहा, हे मेरे पुत्र, क्या बात है उस ने कहा, देख, आग और लकड़ी तो हैं; पर होमबलि के लिये भेड़ कहां है? इब्राहीम ने कहा, हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा। सो वे दोनों संग संग आगे चलते गए। और वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उसको बताया था पहुंचे; तब इब्राहीम ने वहां वेदी बनाकर लकड़ी को चुन चुनकर रखा, और अपने पुत्र इसहाक को बान्ध के वेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया।

इब्रानी 11:17 विश्वास ही से इब्राहीम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिस ने प्रतिज्ञाओं को सच माना था।

प्रत्येक प्रभावित व्यक्ति हर बार परमेष्वर की आवाज़ नहीं सुनता

जैसा कि हमने कल की उपासना में चर्चा की थी कि अब्राहाम ने परमेष्वर की आवाज़ सुनी कि वह अपने पुत्र इसहाक को होमबलि करके चढ़ा दे.....जबकि इसहाक ने यह केवल अब्राहाम से ही सुना था। हम नहीं जानते कि क्या इसहाक ने भी स्वर्ग से वह आवाज़ सुनी थी जिसने अब्राहाम से अपनी योजना बदलने और इसहाक को होमबलि करके चढ़ाने से मना किया था। तथापि, पवित्रषास्त्र में ऐसी कई घटनाएं दर्ज हैं जहां प्रत्येक प्रभावित व्यक्ति ने स्वयं परमेष्वर की आवाज़ नहीं सुनी। शमूएल के साथ भी ऐसा ही हुआ जिसने बचपन में ही परमेष्वर की आवाज़ को उसका नाम पुकारते और अपना संदेष देते सुना जबकि बूढ़े याजक एली ने कुछ भी नहीं सुना। परमेष्वर जिससे चाहे उससे बात करता है और कभी कभी आवाज़ से प्रभावित होने वाले सभी लोग उस आवाज़ को नहीं सुनते। परमेष्वर को चुननें दें कि वह किसे इस्तेमाल करेगा और इसमें कोई संदेह नहीं कि कभी कभी आप परमेष्वर की आवाज़ सुनेंगे और कभी कभी आप दूसरों के द्वारा सुनेंगे जिनसे परमेष्वर बात करने को चुनता है।

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रिय स्वर्गिक पिता, मुझे अनुग्रह दें कि आपकी आवाज़ सुनने के समय आप पर भरोसा कर सकूं और साथ ही उन लोगों की अगुवाई के द्वारा भी आप पर भरोसा रखूं जिन्हें आपने मेरे जीवन में रखा है। मैं

जानता हूँ कि आपकी आवाज़ आपके वचन की कभी उल्लंघना नहीं करेगी। हे प्रभु मुझे अपना वचन सिखाएं।

आज के लिए वचन

1 शमूएल 3:9–11, 15 इसलिये एली ने शमूएल से कहा, जा लेट रह; और यदि वह तुझे फिर पुकारे, तो तू कहना, कि हे यहोवा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है तब शमूएल अपने स्थान पर जाकर लेट गया। तब यहोवा आ खड़ा हुआ, और पहिले के समान पुकारा, शमूएल! शमूएल! शमूएल ने कहा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है। यहोवा ने शमूएल से कहा, सुन, मैं इस्राएल में एक काम करने पर हूं, जिससे सब सुननेवालों पर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा। और शमूएल भोर तक लेटा रहा; तब उस ने यहोवा के भवन के किवाड़ों को खोला। और शमूएल एली को उस दर्शन की बातें बतानें से डरा।

दर्षन की सामर्थ को कभी कम न आँकें

बहुत बार लोग वर्तमान हालातों के कारण अपने भविष्य का दर्षन खो बैठते हैं। उलझन की घटाएं और परेषानियों के मौसम हमसे हमारे भविष्य की आषा चुरा लेते हैं। उलझन के इन पलों में महानतम दिनों के दर्षन के अलावा कोई और बात हमें बल नहीं दे सकती। चाहे हम अपने जीवन की किसी कठिन चुनौती का सामना कर रहे हैं या जीवन के किसी मौसम में बदलाव में से होकर गुज़र रहे हैं, आने वाले बेहतर कल की आषा ही वह कुंजी है जो हमें हमारे मार्ग पर दृढ़ता से आगे बढ़ाती है।

क्षणभर के कुहरे के कारण उस पल में सीमित न हो जाएं। आगे देखें और परमेष्वर से कहें कि वह उस आने वाले कल की झलक आपको दिखाए जो उसने आपके लिए तैयार किया है। दर्षन की सामर्थ को कभी कम न आँकें। यह आपका आनन्द लौटा लाएगा, आपको बल देगा, जीवन की घाटियों में आपका मार्गदर्षन करेगा। कभी न भूलें, आपका महानतम दिन अभी आने पर है।

आज के लिए प्रार्थना

हे परमेष्वर, मैं आपसे मांगता हूँ कि मुझे उस भविष्य की झलक दिखाएं जो आपने मेरे लिए तैयार किया है। रात के समय मेरे पास आएं और दर्षन तथा सपनों के द्वारा मुझसे बात करें। अपने आत्मा के माध्यम से मुझे मेरे महानतम दिन की ओर ले जाते हुए मुझे बल अैर आनन्द दें।

आज के लिए वचन

भजन 126:1 जब यहोवा सिय्योन से लौटनेवालों को लौटा ले आया, तब हम स्वप्न देखनेवाले से हो गए।

अय्युब 33:14–16 क्योंकि ईश्वर तो एक क्या वरन दो बार बोलता है, परन्तु लोग उस पर चित्त नहीं लगाते। स्वप्न में, वा रात को दिए हुए दर्शन में, जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं, वा बिछौने पर सोते समय, तब वह मनुष्यों के कान खोलता है, और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है,

प्रेरितों 2:17 कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।

नीतिवचन 29:18 जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है वह धन्य होता है।

परमेष्वर कहता है "मुझ पर भरोसा करो, मुझे परखो, और मुझे प्रमाणित करो"

परमेष्वर अधिपति है, न केवल सर्वषक्तिमान, बल्कि अधिपति। परमेष्वर की परीक्षा नहीं ली जा सकती और न ही उसे हमारे प्रष्नों का जवाब देने के लिए विवष किया जा सकता है। फिर भी उसने प्रस्ताव रखा है

कि वह स्वयं को अपनी संतानों के सामने प्रमाणित करे ताकि हम उसके वचन पर अधिक भरोसा करें और उस पर अपना विष्वास बढ़ाएं। परमेष्वर ने अपनी स्वेच्छा से यह घोषणा की है कि हम उसे परखें और देखें कि क्या वह हमारे लिए अपना वचन पूरा करेगा या नहीं।

मलाकी की पुस्तक की ऐसी ही एक आयत हमारे दषमाँषों और भेटों के बारे में बात करती है। आज फैसला लें कि आप परमेष्वर पर भरोसा रखेंगे, उसे परखेंगे, और उसे अवसर देंगे कि वह आपके लिए अपने आप को विष्वासयोग्य प्रमाणित करे। यह तब आरम्भ होता है जब आप अपने जीवन के हालातों में परमेष्वर का वचन लागू करते हैं। आज ही उसे परखें।

<u>आज के लिए प्रार्थना</u>
हे प्रभु, केवल आप ही परमेष्वर हैं और आपके अलावा और कोई नहीं है। मुझे प्रेम करने और मेरी देखभाल करने के लिए आपका धन्यवाद। मैं सब बातों में आपके वचन के द्वारा आप पर भरोसा रखूंगा। मुझे दिखाएं कि आप मुझ से क्या करवाना चाहते हैं और मैं उसे करूँगा। जैसे जैसे मेरा विष्वास बढ़ता है, मुझे दूसरों के साथ अपनी गवाहियां बांटना सिखाएं।

<u>आज के लिए वचन</u>
मलाकी 3:10 सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं।

भजन 9:10 और तेरे नाम के जानने वाले तुझ पर भरोसा रखेंगे, क्योंकि हे यहोवा तू ने अपने खोजियों को त्याग नहीं दिया।।

भजन 56:11 मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, मैं न डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?

यदि परमेष्वर आपके दिन में प्रथम स्थान पर नहीं है, तो शायद वह आपके जीवन में भी प्रथम स्थान पर नहीं है

जीवन व्यस्त है और हमारे दिन ऐसे कामों से भरे पड़े हैं जो हमारे समय की मांग करते हैं। दिन गुज़रते हैं और सप्ताहों में बदल जाते हैं और लगभग बिना किसी चेतावनी के ये सप्ताह महीनों में बदल जाते हैं। अक्सर ऐसा लगता है कि ज़िंदगी की छोटी, साधारण और सार्थक बातों का आनन्द मनाने के लिए हमारे पास बहुत कम समय बचता है।

यदि हम सतर्क नहीं हैं, तो परमेष्वर के साथ हमारे संबंध पर भी इसका बुरा असर पड़ सकता है। उससे संबंध तोड़ना, अपने प्रार्थना के जीवन में षिथिल हो जाना, और परमेष्वर के वचन के अध्ययन को हमारे दिन की प्रमुख प्राथमिकता देने में असफल हो जाना बहुत आसान है। तथापि, यदि परमेष्वर आपके दिन में प्रथम स्थान पर नहीं है तो ऐसा भी कहा जा सकता है वह आपके जीवन में भी प्रथम स्थान पर नहीं है। अभी बदलाव करें। प्रत्येक दिन का प्रारम्भ परमेष्वर के साथ करने के लिए प्रतिबद्ध हो जाएं।

<u>आज के लिए प्रार्थना</u>
हे पिता, मुझे उन पलों के लिए क्षमा कर दें जब मैं ने आपको अपने दिन के सबसे अच्छे समय में षामिल नहीं किया। मुझे प्रत्येक सुबह याद दिलाएं कि आप मेरे साथ समय बिताने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब हम मिलकर आपके वचन में से कुछ सीखते हैं तो अपने राज्य के खजाने खोल दें। हे परमेष्वर मेरी प्रार्थनाएं सुनें। मैं आपसे प्रेम करता हूँ।

<u>आज के लिए वचन</u>

उत्पत्ति 19:27 भोर को इब्राहीम उठकर उस स्थान को गया, जहां वह यहोवा के सम्मुख खड़ा था;

मरकुस 1:35 और भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहां प्रार्थना करने लगा।

नीतिवचन 8:17 जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उन से मैं भी प्रेम रखती हूं, और जो मुझ को यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं।

राहत अक्सर एक कठिन फैसले जितनी दूर ही होती है

मैंने ऐसा सुना है कि यदि किसी समस्या का समाधान धन से हो सकता है, समय से हो सकता है या केवल एक कठिन फैसले से हो सकता है तो यह समस्या नहीं बल्कि एक अवसर है। तथापि, कुछ हालात ऐसे होते हैं जिनका उपचार केवल एक कठिन फैसला लेकर भी किया जा सकता है। तब भी ऐसा ही हुआ जब मनुष्य से अनन्त अलगाव परमेष्वर के सामने था। धन इस समस्या का समाधान नहीं कर सकता था और उपचार के बिना समय इसे और बद्तर बना देता। परमेष्वर की समस्या का एकमात्र जवाब यही था कि वह अपने एकलौते पुत्र को बालक के रूप में भेजे, जो बैतलहम में एक चरनी में जन्मे, जिसकी नियती ठुकराया जाना, घायल होना, मार खाना, और क्रूसार्पित होना हो, और वह भी उन सब पापों के लिए जो उसने किए ही नहीं। यह एक कठिन फैसला था परन्तु इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं था और यह फैसला कोई और नहीं बल्कि परमेष्वर ही ले सकता था। हालाँकि ऐसे किसी और बलिदान की आवष्यकता अब कभी नहीं पड़ेगी, पर फिर भी हमारे सामने ऐसे हालात आते रहेंगे जिनका उपचार कठिन फैसले लिए बिना नहीं किया जा सकता। तथ्यों का सामना करें, हो सकता है कि राहत केवल एक कठिन फैसले जितनी ही दूर है.....और शायद इसका समाधान केवल आप ही कर सकते हैं।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रिय प्रभु, मेरी सहायता करें कि मैं अपनी जिम्मेदारी को गम्भीरता से निभा सकूं और यह जान सकूं कि कुछ हालातों का समाधान केवल मैं ही कर सकता हूँ। मेरी सहायता करें कि मैं सही फैसले ले सकूं, चाहे ये कितने ही कठिन क्यों न हों।

आज के लिए वचन

यषायाह 53:3–5 वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना। निश्चय उस ने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं।

व्यवस्थाविवरण 30:19 मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे साम्हने इस बात की साक्षी बनाता हूं, कि मैं ने जीवन और मरण, आशीष और शाप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिये तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें।

परमेष्वर लोगों के द्वारा लोगों को देता है

क्रिसमस से पहले की रात को परमेष्वर ने सारी मनुष्यजाति के लिए अपना सबसे बड़ा उपहार.....उद्धार का उपहार देने की सारी तैयारी कर ली थी। परमेष्वर ने अपना सबसे बड़ा उपहार देने का चयन कैसे किया? उसने यीषु नासरी के द्वारा सारी मनुष्यजाति को उद्धार देने का चयन किया। जब जब परमेष्वर कोई काम पूरा करना चाहता है तो अक्सर एक बालक का जन्म होता है। क्यों? क्योंकि परमेष्वर ने लोगों के द्वारा लोगों को देने का चयन किया है। हालाँकि यीषु परमेष्वर का पुत्र है परन्तु साथ ही वह मनुष्य का पुत्र भी

है और अपनी मानवता के द्वारा ही यीषु ने कीमत चुकाई और परमेष्वर का उपहार मनुष्यजाति तक पहुंचाया।

यह सिद्धांत सारे पवित्रषास्त्र में और हमारे जीवनभर जारी रहता है। यदि परमेष्वर आपको आषीष देना चाहता है तो वह उन आषीषों को अक्सर अन्य लोगों के द्वारा भेजता है। देखिए, परमेष्वर आपको वह सब नहीं देगा जो वह आपके द्वारा किसी और को नहीं दे सकता। आज परमेष्वर अन्य लोगों को आषीष देना चाहता है......क्या वह आप पर भरोसा रख सकता है? यदि परमेष्वर आपको आषीष देता है तो क्या आप अन्य लोगों को आषीष देंगे? परमेष्वर को बताएं कि आप उसका दिया हुआ उपहार आज किसी जरूरतमंद तक पहुंचाने के लिए तैयार हैं।

आज के लिए प्रार्थना
हे परमेष्वर, आपके पुत्र यीषु और उद्धार के उस उपहार के लिए आपका धन्यवाद जो उसने मुझ तक पहुंचाया। हे प्रभु, आपकी आषीषों को अन्य जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाने के लिए मुझे इस्तेमाल करें। मुझे आषीष दें और मुझे आषीष बनाएं। मुझे दें और मेरे द्वारा दें, यीषु के नाम में, आमीन।

आज के लिए वचन
लूका 6:38 दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगाः लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।

उत्पत्ति 12:2 और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा।

लूका 19:8 जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं।

आपके लिए परमेष्वर की इच्छा अच्छी है
आज, मसीही लोग हमारे प्रभु यीषु, यहूदियों के मसीहा और संसार के मुक्तिदाता का जन्मदिन मनाते हैं। जिस रात यीषु का जन्म हुआ, उस रात बैतलहम के खेतों में कुछ स्वर्गदूत चरवाहों के सामने खोए हुए और दुखी संसार के लिए परमेष्वर की इच्छा की उद्घोषणा करते हुए प्रकट हुए। उस रात सर्वोपरि वह प्रकाषन था जो वे स्वर्गदूत मनुष्यजाति के पास लाए थे। स्वर्गदूतों ने गाया, "पृथ्वी पर मनुष्यों को शांति और आषीषें मिलें।"

हालाँकि मैं आपको यह तो नहीं बता सकता कि परमेष्वर ने आपके लिए क्या क्या रखा हुआ है या वह किस मार्ग पर आपको ले चलेगा, परन्तु एक बात मैं दृढ़ता से कह सकता हूँ कि आपके लिए परमेष्वर की इच्छा अच्छी है। वह मनुष्यों के प्रति क्रोध, बुरी इच्छा या दुर्भावना नहीं रखता। बैतलहम में कुवांरी से जन्मे परमेष्वर के पुत्र यीषु ने संसार के सामने प्रकट किया कि परमेष्वर केवल हमारी भलाई ही चाहता है। इस भले परमेष्वर पर और यीषु को अपना मुक्तिदाता और प्रभु स्वीकार करके उसकी योजना पर भरोसा रखें।

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रिय स्वर्गिक पिता, आज मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने अपने पुत्र यीषु को पृथ्वी पर भेजा। मैं विष्वास करता हूँ कि वह कुवांरी से जन्मा, पापरहित जीवन व्यतीत किया और प्रायष्चित की मृत्यु मरा। मैं स्वर्गदूतों की उद्घोषणा पर विष्वास करता हूँ और यह खुषखबरी दूसरों तक पहुंचाने के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध करता हूँ।

आज के लिए वचन

लूका 2:10–14 तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है। और इस का तुम्हारे लिये यह पता है, कि तुम एक बालक को कपड़े मे लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे। तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया। कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।

पापों की क्षमा पाप करने का लाइसेंस नहीं है

यीषु, परमेष्वर का पुत्र, यहूदियों का मसीहा और संसार का मुक्तिदाता बैतलहम में कुवांरी से जन्मा, पापरहित जीवन व्यतीत किया और प्रायष्चित की मृत्यु मरा। कलवरी के क्रूस पर उसकी मृत्यु ने मनुष्यजाति के सारे पापों की कीमत सदा के लिए चुका दी। यीषु हमारे प्राणों को नरक की अनन्तता और इस जीवन के नरक से बचाने के लिए मरा। उसने हमें पाप की शक्ति से बचाया कि हमारे प्राण सदा के लिए नाष न हों और पाप हमारे जीवन पर अस्थाई शासन भी न करे। यीषु का लहू एक बार लगा लेने से परमेष्वर की क्षमा सम्पूर्ण हो जाती है। वह उन पापों को फिर कभी स्मरण नहीं करता जिनकी क्षमा मिल चुकी है; वह उन्हें अपनी पीठ के पीछे फेंक देता है; उन्हें भूल के सागर में डाल देता है; और उन्हें हमसे इतनी दूर कर देता है जितनी दूर पूर्व से पष्चिम हैं। परमेष्वर पिता ने हम सब के अधर्म अपने पुत्र यीषु पर डाल दिए और हमें क्षमा मिल चुकी है। तथापि, पापों की क्षमा पाप करने का लाइसेंस नहीं है।

आज के लिए प्रार्थना

हे पिता, सब मनुष्यों ने पाप किया है और आपके अनुग्रह से वंचित हैं और पाप की मजदूरी मृत्यु है, परन्तु आपका महान उपहार हमारे प्रभु यीषु मसीह में अनन्त जीवन है। मेरे पाप क्षमा कर दें, मुझे सारे अधर्म से शुद्ध कर दें और इसकी पकड़ से आज़ाद होकर जीने को अनुग्रह दें।

आज के लिए वचन

रोमियों 6:14 और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं बरन अनुग्रह के आधीन हो।

रोमियों 10:13 क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।

यषायाह 53:6 हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

भजन 25:11 हे यहोवा अपने नाम के निमित्त मेरे अधर्म को जो बहुत हैं क्षमा कर।

यषायाह 55:7 दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।

कुछ प्राप्त करने के लिए आपने जो किया, उसे सुरक्षित रखने लिए भी आपको सामान्यतः वही करना पड़ता है

जब यूहन्ना ने प्रकाषितवाक्य की पुस्तक लिखी, यीषु ने उससे इफिसुस की कलीसिया के बारे में बात की। यह एक अच्छी कलीसिया थी जिसने परिश्रम किया, बहुत उत्पादक थी, बहुत धीरजवंत थी, बुराई से नफरत करती थी, और सिद्धांतों को सुरक्षित रखती थी। यह सब उन्होंने यीषु और उसके नाम की खातिर बिना थके निरंतर किया। तथापि, यीषु ने एक बात उनके विरोध में कहीः उन्होंने अपना पहला प्रेम छोड़ दिया था। यीषु किस ओर इषारा कर रहा था? वह केवल एक सिद्धांत बता रहा है कि मसीहीयत के मूल तत्व

कभी नहीं बदलेंगे और हम चाहे कितने ही उत्पादक या व्यस्त क्यों न दिखाई दें, जब तक हम यीषु के साथ घनिष्ठता से और जीवनदायी संबंध में नही जुड़े हैं, हमारे सारे काम व्यर्थ हैं। यह बात हमारे वैवाहिक जीवन और/या नौकरी सहित सभी संबंधों में लागू होती है। कुछ प्राप्त करने के लिए आपने जो किया, उसे सुरक्षित रखने लिए भी आपको सामान्यतः वही करना पड़ता है। मूल तत्वों की ओर वापिस मुड़ें और अपना पहला प्रेम कभी न भूलें।

आज के लिए प्रार्थना

हे परमेष्वर पिता, मुझे मेरी त्रुटियां और मेरे हृदय की सच्ची प्रेरणा दिखाएं। मुझे अपना पहला प्रेम और यहां तक पहुचने के लिए मैंने जो कुछ किया है उसे कभी न भूलने में मेरी सहायता करें। आपके राज्य में सेवा करते हुए मुझे जीवन के मूल तत्वों और संबंधों को मूल्यवान जानना सिखाएं।

आज के लिए वचन

प्रकाषितवाक्य 2:1–5 इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जो सातों तारे अपने दहिने हाथ में लिए हुए है, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है कि मैं तेरे काम, और परिश्रम, और तेरा धीरज जानता हूं; और यह भी, कि तू बुरे लोगों को देख नहीं सकता; और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तू ने परखकर झूठा पाया। और तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के लिये दु:ख उठाते उठाते थका नहीं। पर मुझे तेरे विरूद्ध यह कहना है कि तू ने अपना पहिला सा प्रेम छोड़ दिया है। सो चेत कर, कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहिले के समान काम कर; और यदि तू मन न फिराएगा, तो मै तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा।

तब तक किसी को पूरी तरह आबंटित नहीं जा सकता जब तक वे सचमुच टूट न जाएं

परमेष्वर अभिमानियों का विरोध करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। दीनता परमेष्वर पर निर्भरता की सनातन जागरूकता है।

कई बार सुसमाचारों में देखा गया है कि यीषु ने रोटी ली, उसे आषीष दी और उसे देने से पहले उसे तोड़ा। यह सिद्धांत हमारे जीवन में परमेष्वर की प्रक्रिया की बात करता है। परमेष्वर का अनमोल हाथ, जो हमें उठाता है और अपने समीन ले आता है, वही प्रेमी हाथ है जो हमें आषीष देता है। बहुत लोगों के साथ यह उतना ही होता है जितना वे परमेष्वर को अपने समीप आने की अनुमति देते हैं। तथापि, पूरी तरह आबंटित होने के लिए आपको उसी प्रेमी परमेष्वर को अपने भीतरी पवित्र स्थान में पहुंचने की अनुमति देनी होगी। वह जानता है कि मनुष्य के भीतर क्या है और वह जानता है कि आप किस काम के लिए कितने सक्षम हैं। परमेष्वर आपको लेना चाहता है और परमेष्वर आपको आषीष देना चाहता है परन्तु वह आपको तोड़ना भी चाहता है ताकि आपको आबंटित किया जा सके। इम्माऊस के मार्ग पर जा रहे दो व्यक्तियों ने षिष्यों को यह कहते हुए गवाही दी, "हमने रोटी तोड़ते समय उसे पहचाना था।" जब परमेष्वर आपके अभिमान या आपके जीवन के बड़े पापों को सुधारना आरम्भ करता है तो हताष न हों। वह केवल आपको आबंटित करना चाहता है।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रिय प्रभु, मुझ पर दया करें और याद रखें कि मैं तो केवल मिट्टी ही हूँ। अपने क्रोध में मेरी ताड़ना न करें बल्कि मेरा जीवन लें, मेरे जीवन को आषीष दें, अपने कोमल हाथों में अपनी इच्छानुसार मेरा जीवन तोड़ें, ताकि आवष्यकतानुसार आप मुझे आबंटित कर सकें, यीषु के नाम में, आमीन।

आज के लिए वचन

यूहन्ना 2:25 और उसे प्रयोजन न था, कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप जानता था, कि मनुष्य के मन में क्या है?

लूका 24:35 तब उन्होंने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि उन्हों ने उसे रोटी तोड़ते समय क्योंकर पहचाना।

मत्ती 26:26 उस ने उस से कहा, तू कह चुकाः जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है।

याकूब 4:6 वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, कि परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।

यदि अब भी कुछ दुख मौजुद हैं तो परमेष्वर का काम अभी पूरा नहीं हुआ है

कया आप कल्पना कर सकते हैं कि यीषु को ऐसे अपराधों के कारण, जो उसने किए ही नहीं, क्रूसार्पित होना, मानवीय दृष्टिकोण से कितना बुरा लगा होगा? वास्तव में, क्रूस पर लटके हुए उसने भजन 22 में से कहा, "हे मेरे परमेष्वर, हे मेरे परमेष्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" यूसुफ, अय्युब, पौलुस, पतरस, मरियम और बाइबल के अनगिनत संतों को भी बहुत बार ऐसा ही महसूस हुआ होगा।

याद रखें, विष्वास का अर्थ यह प्रतीति करना है कि हम चाहे कहीं भी हों, या जीवन के किसी भी हालात का सामना कर रहे हों, तब भी सबकुछ परमेष्वर के नियंत्रण में है। पवित्रषास्त्र में दर्ज संतों की जीवनगाथाओं से आज बल और विष्वास प्राप्त करें और जान लें कि यदि अब भी दुख मौजुद हैं तो परमेष्वर को काम अभी पूरा नहीं हुआ है!

आज के लिए प्रार्थना

हे परमेष्वर, यह जानने में मेरी सहायता करें कि आपके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन और मेरा समय आपके हाथों में है और उत्तम अभी आना बाकी है!

आज के लिए वचन

रोमियों 8:28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

यूहन्ना 16:33 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।

परमेष्वर भविष्य को ध्यान में रखकर बोलता है

जब परमेष्वर ने मूसा से कहा कि वह उसकी प्रजा को मिस्त्र में फिरौन की गुलामी से आज़ाद करवा लाए, उसने मूसा को स्वर्ग के एक संदेष के साथ भेजा। जो संदेष मूसा ने परमेष्वर से प्राप्त करके इस्त्राएलियों को सुनाया वह बहुत सीधा और स्पष्ट थाः 'मैं तुम्हें मिस्त्र से आज़ाद करवाऊँगा और प्रतिज्ञा किए हुए देष में ले जाऊँगा जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं।' जब परमेष्वर ने दाऊद को सारे इस्त्राएल पर राजा होने के लिए अभिषेक करने के लिए शमूएल को भेजा तो परमेष्वर ने नबी के द्वारा दाऊद से उसके महान भविष्य के बारे में बात की कि वह परमेष्वर की सारी प्रजा पर शासन करेगा। जब यीषु ने गलील के किनारे अपने प्रथम षिष्यों से पहली बार बात की तो उन्हें कहा, "मेरे पीछे हो लो और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊँगा।"

परमेष्वर के ये वचन मनुष्यों से उनके भविष्य की बात करते हैं परन्तु उस भविष्य को पाने की लम्बी, कठिन, और मंहगी यात्रा के बारे में कोई बात नहीं करते। परमेष्वर भविष्य को ध्यान में रखकर हमसे बात करता है, और फिर उस भविष्य को पाने की यात्रा पर हमारे साथ चलता है। जीवन एक यात्रा है.....और परमेष्वर के साथ यात्रा आपकी मित्र बन जाती है।

आज के लिए प्रार्थना
हे परमेष्वर, मेरे जीवन के लिए आपकी इच्छा को स्वीकार करने के लिए बुद्धि और उस इच्छा की पूर्ति के लिए आपके मार्ग पर चलने का बल मुझे दें। आमीन।

आज के लिए वचन
गलातियों 6:9 हम भले काम करने में हियाव न छोड़े, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।

गिनती 21:4 फिर उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया, कि एदोम देश से बाहर बाहर घूमकर जाएं; और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया।

मत्ती 4:19 और उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊंगा।

आपका महानतम दिन तब तक नहीं आएगा जब तक आप अपने जीवन की महानतम परख में सफल न हो जाएं

मनुष्यजाति में, पषुओं के संसार में और यहां तक कि फसल के बीज बोने में भी जन्म के समय से ही जीवन का आरम्भ संघर्षों से होता है। दिन प्रतिदिन, वर्ष प्रतिवर्ष, जैसे जैसे हम अपनी वृद्धि का विरोध करने वाली और हमें रोकने का प्रयास करने वाली ताकतों सामना करके उन्हें पीछे धकेलते जाते हैं, हमारा जीवन बलवंत होता जाता है। संघर्ष निरंतर चलने वाला जीवन का एक अंग है क्योंकि संघर्ष में ही हम बलवंत होते हैं। याकूब ने एक स्वर्गदूत के साथ, दाऊद ने अपने पाप के साथ, मूसा ने अपनी बुलाहट के साथ, पतरस ने अपने डर के साथ, पौलुस ने अपने अतीत के साथ और यीषु ने अपने भविष्य के साथ संघर्ष किया। प्रत्येक संघर्ष में जो लोग विजयी हुए और उस परिस्थिति में जयवंत हुए, वही लोग आगे चलकर पूरी परिस्थिति के ऊपर भी जयवंत हुए। जब ज़िंदगी आपको परखती है तो हताष न हों और याद रखें असफलता हार नहीं है। धर्मीजन चाहे सात बार भी गिरे तौभी वह उठ खड़ा होगा। विष्वास की अच्छी कुष्ती लड़ें। युद्ध में अपने आप को बलवंत करें और याद रखें कि आपका महानतम दिन तब तक नहीं आएगा जब तक आप अपने जीवन की महानतम परख में सफल न हो जाएं।

आज के लिए प्रार्थना
हे पिता, आपका वचन कहता है कि यदि मैं अपनी विपत्ति के दिन मूर्छित हो जाऊँ तो मेरा बल बहुत छोटा है। मैं आपसे मांगता हूँ कि आप मुझ पर काम करें, और जीवन के सम्भालने लायक, न ज्यादा कठिन, न ज्यादा आसान, परन्तु मेरी आयु और जीवन की अवस्था के अनुसार उचित लक्ष्य देने के द्वारा मुझे फैलाएं और मजबूत बनाएं ताकि मैं बढ़ सकूं। मुझे अपने मार्ग सिखाएं।

आज के लिए वचन
नीतिवचन 24:16 क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे तौभी उठ खड़ा होता है; परन्तु दुष्ट लोग विपत्ति में गिरकर पड़े ही रहते हैं।

1 तीमुथियुस 6:12 विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिस के लिये तू बुलाया, गया, और बहुत गवाहों के साम्हने अच्छा अंगीकार किया था।

1 कुरिन्थियों 10:13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर हैः और परमेश्वर सच्चा हैः वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, बरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको।

2 कुरिन्थियों 4:17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।